श्रीमत्सारजिनेन्द्रदेवगदितं त्रैलोक्यसंपूजितं नाना शर्मविधायकं भवहरं स्वर्मोक्षदं सत्तपः।
आराध्यैव विशुद्धभक्तिभरतो ये साधवो धीधनाः प्राप्ता मुक्तिसुखं विनाशरहितं कुर्युस्तु ते मे श्रियम् ॥२५॥

इति कथाकोशे श्रीसोमशर्ममुनेराख्यानं समाप्तम्।

८७. कालाध्ययनाख्यानम्

यस्य ज्ञानं जगत्सारसंसाराम्भोधिपारदम्। तं प्रणम्य जिनं वक्ष्ये कालाध्ययनवृत्तकम् ॥१॥
वीरभद्रो जगद्भद्रो मुनीन्द्रो जैनतत्त्ववित्। एकदासौ महाटव्यां महोरात्रं पठेच्छ्रुतम् ॥२॥
श्रुतदेव्या तया दृष्टस्ततः सम्बोधनाय च। धृत्वा गोकुलिकारूपं समागत्य निशि स्फुटम् ॥३॥
सुगन्धिमधुरं तक्रं गृहीस्वेति स्व लीलया। सा जल्पन्ती मुनेः पार्श्वे चक्रे पर्यटनं तदा ॥४॥
वीरभद्रो मुनिः प्राह शास्त्राभ्यासैकमानसः। मुग्धे किं गृहिलासीति तक्रं गृह्णाति कोधुना ॥५॥
निशायां निर्जने देशे तच्छ्रुत्वा देवतावदत्। त्वमेव गृहीलोऽकाले पठस्यत्रागमं यतः ॥६॥
ततोसौ मुनिरालोक्य नक्षत्राणि नभस्तले। प्रबुद्धो गुरुसान्निध्यं गत्वालोच्य निजक्रियाम् ॥७॥

जो बुद्धिरूपी धन के मालिक, बड़े विचारशील साधु-सन्त जिन भगवान् के द्वारा उपदेश किए, सारे संसार में पूजे-माने जाने वाले, स्वर्ग-मोक्ष के या और सब प्रकार सांसारिक सुख के कारण, संसार का भय मिटाने वाले ऐसे परम पवित्र तप को भक्ति से ग्रहण करते हैं वे कभी नाश न होने वाले मोक्ष सुख का लाभ करते हैं। ऐसे महात्मा योगीराज मुझे भी आत्मीक सच्चा सुख दें ॥२५॥

८७. कालाध्ययन की कथा

जिनका ज्ञान सबसे श्रेष्ठ है और संसारसमुद्र से पार करने वाला है, उन जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर उचित काल में शास्त्राध्ययन कर जिसने फल प्राप्त किया उसकी कथा लिखी जाती है ॥१॥

जैनतत्त्व के विद्वान् वीरभद्र मुनि एक दिन सारी रात शास्त्राभ्यास करते रहे। उन्हें इस हालत में देखकर श्रुतदेवी एक अहीरनी का वेष लेकर उनके पास आई इसलिए कि मुनि को इस बात का ज्ञान हो जाए कि यह समय शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने का नहीं है। देवी अपने सिर पर छाछ की मटकी रखकर और यह कहती हुई, कि लो, मेरे पास बहुत ही मीठी छाछ है, मुनि के चारों ओर घूमने लगी। मुनि ने तब उसकी और देखकर कहा-अरी, तू बड़ी बेसमझ जान पड़ती है, कहीं पगली तो नहीं हो गई है बतला तो ऐसे एकान्त स्थान में ओर रात में कौन तेरी छाछ खरीदेगा? उत्तर में देवी ने कहा-महाराज क्षमा कीजिए। मैं तो पगली नहीं हूँ किन्तु मुझे आप ही पागल देख पड़ते हैं। नहीं तो ऐसे असमय में, जिसमें पठन-पाठन की मना है, आप क्यों शास्त्राभ्यास करते? देवी का उत्तर सुनकर मुनिजी की आँखें खुलीं। उन्होंने आकाश की ओर नजर उठाकर देखा तो उन्हें तारे चमकते हुए देख पड़े उन्हें मालूम हुआ कि अभी बहुत रात है। तब वे पढ़ना छोड़कर सो गए ॥२-७॥

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

शास्त्रं संपठति स्मोच्चैः काले काले तथान्यदा। तं पठन्तं जिनैः प्रोक्तं स्वागमं मुनिसत्तमम् ॥८॥
दृष्ट्वासौ देवता तुष्टा विशुद्धाष्टविधार्चनैः। पूजयामास सद्भक्त्या सद्गुणैः को न पूजितः ॥९॥
ततोसौ वीरभद्रस्तु मुनीन्द्रो ज्ञानमण्डितः। दर्शनज्ञानचारित्रैः परलोकं सुधीर्गतः ॥१०॥

तस्माच्छ्रीजिनभाषितं शुभतरं ज्ञानं जगन्मोहनं
नित्यं सारविभूतिशर्मजनकं स्वर्गापवर्गप्रदम्।
युक्ता भक्तिभरेण निर्मलधियो विश्वप्रदीपं हितं
श्रित्वा शोककलंकपङ्कहरणं कुर्वन्तु सन्तः सुखम् ॥११॥

इति कथाकोशे कालाध्ययनाख्यानं समाप्तम्।

८८. अकालाध्ययनाख्यानम्

नत्वा जिनं जगद्वन्द्यं केवलज्ञानलोचनम्। अकालाख्यानकं वक्ष्ये सतां सम्बोधहेतवे ॥१॥
शिवनन्दी मुनिः कश्चिदेकदा गुरुवाक्यतः। श्रीमच्छ्रवणनक्षत्रोदये स्वाध्यायकालकः ॥२॥

सबेरा होने पर वे अपने गुरु महाराज के पास गए और अपनी इस क्रिया की आलोचना कर उनसे उन्होंने प्रायश्चित्त लिया। तब से वे शास्त्राभ्यास का जो काल है उसी में पठन-पाठन करने लगे। उन्हें अपनी गलती का सुधार किए देखकर देवी उनसे बहुत खुश हुई। बड़ी भक्ति से उसने उनकी पूजा की। सच है, गुणवानों की सभी पूजा करते हैं ॥७-९॥

इस प्रकार दर्शन, ज्ञान और चारित्र का यथार्थ पालन कर वीरभद्र मुनिराज अन्त समय में धर्म-ध्यान से मृत्यु लाभ कर स्वर्गधाम सिधारे ॥१०॥

भव्यजनों को भी उचित है कि वे जिन भगवान् के उपदेश किए, संसार को अपनी महत्ता से मुग्ध करने वाले, स्वर्ग या मोक्ष की सर्वोच्च सम्पदा को देने वाले, दुःख, शोक, कलंक आदि आत्मा पर लगे हुए कीचड़ को धो-देने वाले, संसार के पदार्थों का ज्ञान कराने में दीये की तरह काम देने वाले और सब प्रकार के सांसारिक सुख के आनुषंगिक कारण ऐसे पवित्र ज्ञान को भक्ति से प्राप्त कर मोक्ष का अविनाशी सुख लाभ करें ॥११॥

८८. अकाल में शास्त्राभ्यास करने वाले की कथा

संसार द्वारा पूजे जाने वाले और केवलज्ञान जिनका प्रकाशमान नेत्र है, ऐसे जिन भगवान् को नमस्कार कर असमय में जो शास्त्राभ्यास के लिए योग्य नहीं है, शास्त्राभ्यास करने से जिन्हें उसका बुरा फल भोगना पड़ा, उनकी कथा लिखी जाती है। इसलिए कि विचारशीलों को इस बात का ज्ञान हो कि असमय में शास्त्राभ्यास करना अच्छा नहीं है, उसका बुरा फल होता है ॥१॥

शिवनन्दी मुनि ने अपने गुरु द्वारा यद्यपि यह ज्ञान रखा था कि स्वाध्याय का समय-काल श्रवण नक्षत्र का उदय होने के बाद माना गया है, तथापि कर्मों के तीव्र उदय से वे अकाल में ही

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY